गुरूवार, 21 अक्टूबर 1982

29 आश्विन 1904 (शक)

लोक सभा वाद-विवाद
का
हिन्दी संस्करण

दसवाँ सत्र

सत्यमेव जयते

[खंड 1 में अंक 1 से 11 तक हैं]

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली

मूल्य : चार रुपये

विषय–सूची

गुरुवार, 21 अक्तूबर, 1982/29 आश्विन, 1904 (शक)

निधन संबंधी उल्लेख 1 – 7

(श्री मुकुन्द मण्डल का निधन)

श्री भीष्म नारायण सिंह 1

श्री समर मुखर्जी 2

श्री रशीद मसूद 3

श्री अटल बिहारी वाजपेयी 3

श्री ईरा मोहन 4

डा० सुब्रह्मण्यम स्वामी 4

श्री इन्द्रजीत गुप्त 4

श्री ए० नीलालोहीथादमन नाडार 5

श्री राम विलास पासवान 5

श्री राजेन्द्र प्रसाद यादव 6

श्री त्रिदिव चौधरी 6

श्री अमर राय प्रधान 7

श्री जी० एम० बनातवाला 7

लोक सभा

गुरुवार, 21 अक्तूबर, 1982/29 आश्विन, 1904 (शक)

लोक सभा 11 बजे समावेत हुई ।

(अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)

निधन सम्बन्धी उल्लेख

अध्यक्ष महोदय : मुझे सदन को श्री मुकुंद मंडल, इस सदन के सदस्य, जो पश्चिमी बंगाल के मथुरापुर निर्वाचन क्षेत्र के प्रतिनिधि थे, के दुःखद निधन की सूचना देनी है । उनका कल रात नई दिल्ली में 35 वर्ष की आयु में निधन हो गया अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली, में पिछली जुलाई से गुर्दे की बीमारी के लिए उनका इलाज हो रहा था ।

श्री मुकुंद मण्डल छठी लोक सभा, 1977–79, के भी सदस्य थे । वह पहले 1971 में पश्चिमी बंगाल विधान सभा के सदस्य निर्वाचित किए गए थे ।

एक योग्य संसद सदस्य के रूप में उन्होंने सदन की कार्यवाही में गहरी रुचि ली ।

एक शिक्षाविद् के रूप में वह कुछ समय तक प्राध्यापक रहे । साहित्यिक कार्य में उनकी गहरी रूचि थी । वह समाज सेवक भी थे और उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में दलित वर्ग की कठिनाइयों को दूर करने में अपना योगदान दिया ।

संसदीय कार्य तथा निर्माण और आवास मंत्री (श्री भीष्म नारायण सिंह) : अध्यक्ष महोदय, श्री मुकुंद मण्डल के निधन से यह सदन एक सक्रिय तथा युवा व्यक्ति से वंचित हो गया है । वह विद्वान थे और उन्होंने अनेक शैक्षिक संस्थाओं में अध्यापन का पवित्र काम किया । वह 1971-76 में पश्चिम बंगाल विधान सभा के सदस्य रहे । वह लोक सभा के लिए 1977 में और पुनः 1980 में निर्वाचित हुए । महोदय, मैं स्वयं को आपके द्वारा व्यक्त भावों से सम्बद्ध करता हूं और निवेदन करता हूं कि दिवंगत आत्मा के परिवार के सदस्यों को ये प्रेषित किए जाएं ।

श्री समर मुखर्जी (हावड़ा) : महोदय, श्री मुकुंद मण्डल का अकस्मात निधन हुआ है, हमें इसकी आशा नहीं थी क्योंकि कल ही मैं उन्हें अस्पताल में मिला था और उन्होंने मुझ से बातचीत की। यद्यपि उन्होंने मुझे बताया कि वह जीवित नहीं रहेंगे। लेकिन उससे आधा घंटा पूर्व मैंने विभागाध्यक्ष से बात की। डॉक्टर को भी यह आशा नहीं थी। रात को मैंने उनसे बातचीत की। उन्होंने भी मुझे यह बताया कि उन्हें इस तरह से उनकी मृत्यु की आशा नहीं थी।

वह काफी समय से बीमार थे, लेकिन, दुर्भाग्य से वह जब भी हमारे चिकित्सा केन्द्र में पहुंचे, चिकित्सा केन्द्र उनकी बीमारी का पता लगाने में असफल रहा। अन्तिम समय में जब कलकत्ता में उनके रोग का निदान किया गया, उस समय उनके दोनों गुर्दे नष्ट हो चुके थे। अत: उन्हें कलकत्ता में डाइलिसिस पर रखा गया। कलकत्ता अस्पताल के डॉक्टरों ने उन्हें यहाँ आने की सलाह दी ; और मैं अपने अध्यक्ष और संसदीय कार्य मन्त्री को धन्यवाद देता हूँ—जब कभी मैंने उन्हें दाखिल कराने की समस्या के लिए कहा—उन्होंने तत्परता से आगे बढ़कर हर तरह से सहायता दी। और डाक्टरों द्वारा किए गए प्रयासों की भी प्रशंसा करता हूँ। लेकिन दुर्भाग्य से उसमें कुछ जटिलता आ गई और कल उन्होंने हमें बताया कि फेफड़ों में कुछ बाधा आनी शुरू हो गयी है। तब उनकी हालत बिगड़ती गई। यद्यपि डाक्टरों ने हमें आश्वासन दिया कि कल से नए तरीके से डाइलिसिस करने के बारे में सोच रहें हैं ताकि उन्हें आराम मिल सके। कल उन्होंने पेट में कुछ गड़बड़ होने की भी शिकायत की। यह एक दुखद घटना घटी है। उनके निधन से हमारे दल के एक युवा और कर्मठ समाज सेवक को खो दिया है। अभी इस सत्र में उनके नाम पर पुर: स्थापन के लिए कार्य सूची में दो गैर-सरकारी विधेयक रखे जाने थे। उनकी खेतिहर मजदूरों, निर्धन वर्गों और ग्रामीण क्षेत्रों के दलित वर्ग में बहुत रुचि थी और इसीलिए उन्होंने वे दो विधेयक रखे। अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के कल्याण सम्बन्धी समीति के सदस्य के रूप में उन्होंने समाज के इन वर्गों के कल्याण के लिए पूरी निष्ठा से काम किया।

आरम्भ से वह न केवल राजनीति में सक्रिय थे बल्कि सामाजिक गतिविधियों में भी सक्रिय थे। 1971 में वह पश्चिम बंगाल विधान सभा के सदस्य निर्वाचित किए गए। उस समय उनकी आयु 24 या 25 वर्ष थी। वह उस समय की पश्चिम बंगाल की स्थिति के कारण सभा के सदस्य नहीं रह सके। 1973 में चुनावों के कुछ माह बाद विधानसभा भंग कर दी गई। 1972 में पुन: चुनाव हुए जिसके विरुद्ध हमने शिकायत की कि इनमें काफी घोटाला किया गया है। आरम्भ से ही वह बहुत कर्मठ और सक्रिय थे और उनकी बहुत प्रबल इच्छा थी कि वह उन्हें चलाये और अपना सक्रिय योगदान दें।

उन्हें राष्ट्रपति के चुनाव से पूर्व यहाँ अस्पताल में दाखिल कराया गया था और उन्हें अस्पताल से व्हील चेयर पर लाया गया और उन्होंने अपना मतदान किया। वह सैन्ट्रल हाल तक आए और सब साथियों से मिले। हमने उन्हें आशा दिलाई कि वह ठीक हो जाएंगे। लेकिन दुर्भाग्य से यह दुखद घटना हो गयी। कल उनकी पत्नी उनके साथ थी। अन्य सम्बन्धी वहाँ

नहीं थे। उनका शव आज रात को कलकत्ता ले जाया जायेगा। उनके शव को हमारे केन्द्रीय दल के कार्यालय, 14, अशोका रोड पर रखा जायेगा। जो साथी उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहते हैं, वहाँ आ सकते हैं। शव आज शाम तक वहाँ रखा जायेगा और शाम 8 बजे की उड़ान से कलकत्ता ले जाया जायेगा।

उनके निधन से केवल हमारे दल को ही नहीं बल्कि हमारे देश के निर्धन वर्ग के लोगों को भी हानि हुई है। अत: आपके द्वारा मैं उन सभी मित्रों का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने उन्हें जीवित रखने का पूरा प्रयास किया, लेकिन फिर भी दुर्भाग्य से यह दुखद घटना हो गई। उनके परिवार के सदस्य हमारे साथ हैं। अत: उनके परिवार के सदस्यों को अफसोस प्रकट करने का प्रश्न ही नहीं है क्योंकि वे हमारे साथ हैं। लेकिन हमें डाक्टरों की कार्य कुशलता की प्रशंसा करनी होगी। हमारी इन भावनाओं को अस्पताल के स्टाफ तक पहुंचाया जाये।

श्री रसीद मसूद (सहारन पुर) : मोहतरम स्पीकर साहब, जिस अफसोस का इजहार आपने फरमाया है, मैं उससे खुद को और अपनी पार्टी को शरीक करता हू। श्री मुकन्द मण्डल साहब आसमाने-सियासत पर वो उभरता हुआ सूरज थे कि हमें यह उम्मीद थी कि शायद आगे चलकर वह हिन्दुस्तान की सियासत में एक अहम मुकाम लेंगे। इस मुख्तसर से आज सात साल के अरसे में जिसमें हमारा और उनका साथ रहा है, हमने उनकी परफार्मेन्स पार्लियामेंट में देखी है। जैसा समर मुखर्जी साहब ने फरमाया, उनके दिल में गरीबों, पिछड़ों और हरिजन-आदिवासियों के लिए एक दर्द था और उस दर्द का इजहार वह न सिर्फ अपनी कांस्टीट्यूएंसी में काम करते थे बल्कि असेम्बली हो या पार्लियामेंट हो, उसमें उस तकलीफ को किस तरह दूर किया जा सकता है कानून के जरिए; इसमें भी वह पीछे नहीं रहते थे। हम देखते हैं कि जो मुख्तलिफ बिल उन्होंने यहाँ पेश किये, ने यही तवक्को और यही उम्मीद लेकर पेश किए गए थे कि इस मुल्क के हजारों लाखों गरीबों, आदिवासियों और पिछड़े वर्गों की तकलीफों को दूर करें। तवक्को तो यह थी कि वे हिन्दुस्तान की सियासत में चमकेंगे, लेकिन यह मालूम नहीं था कि वह हमसे इस कदर जल्दी जुदा हो जायेंगे।

मैं समझता हूं कि अगर यह इंसान के हाथ में होता कि अपने आपको बचा सकता या रोक सकता, तो हम सब लोगों की यह कोशिश होती कि किसी भी तरीके से कुछ भी करके उनको बचाया जा सकता। लेकिन यह हमारे हाथ में नहीं है। इसलिए अलावा अफसोस करने के और कुछ ऐसा काम करने के जो वह आइन्दा भी याद रहे और कुछ नहीं कर सकते। मैं अपनी तरफ से अपनी पार्टी की तरफ से उनके खानदान के साथ इजहारे अफसोस करता हूं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (नई दिल्ली) : अध्यक्ष महोदय, शरीर कितना नश्वर है और जीवन कितना क्षण भंगुर है यह कठोर सत्य एक फिर से श्री मुकुन्द मण्डल के दुखद देहावसान के रूप में हमारे सामने आ गया हैं। अभी उनकी उम्र ही क्या थी। लेकिन शायद काल के यहां आयु का कोई हिसाब नहीं है। वह कल तक थे हमारे बीच में, लेकिन आज नहीं हैं। मृत्यु हमेशा दुखदायी होती हैं। लेकिन ऐसी मृत्यु जिसे भरी जवानी में मृत्यु कहा जा सकता है हृदय में ऐसी चोट लगाती है जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते। श्री मण्डल इस सदन के एक सक्रिय सदस्य

थे, दलित वर्ग में से आये थे और दलित वर्ग की व्यथा को समझते थे। उनके लिए राजनीति एक मिशन का रूप थी। उनके विचारों से किसी का मतभेद हो सकता है, लेकिन एक निष्ठावान राजनीतिक कार्यकर्त्ता हमारे बीच में से उठ गया उनके निधन से बड़ी हृदय विदारक परिस्थितियों में यह मृत्यु हुई है। उनका अभाव हमें खलेगा।

हम अपने मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के मित्रों को विश्वास दिलाना चाहते है हैं और श्री मुकुन्द मण्डल के परिवार के सदस्यों को भी, कि इस शोक में वह अकेले नहीं हैं, हम सब उनके सहभागी हैं और विश्वास करते हैं कि श्री मुकुन्द मण्डल ने जो काम अपने हाथ में लिया था उनके साथी उसे आगे बढ़ाने का निरंतर प्रयत्न करते रहेंगे।

* **श्री इरा मोहन** (कोयम्बटूर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री मुकुन्द मण्डल के अकस्मात निधन पर आपके द्वारा तथा अन्य सदस्यों द्वारा प्रकट की गई संवेदना से मैं अपने तथा अपने दल डी. एम. को संबद्ध करता हूं। श्री मुकुन्द मंडल की अकाल मृत्यु ने हम सबको दुःख के अंधकार में छोड़ दिया है। यह सचमुच दुःख की बात है कि युवावस्था में ही मौत ने उन्हें हम से छीन लिया। मुझे कई बार उनसे मिलने और कई राष्ट्रीय समस्याओं पर चर्चा करने का अवसर मिला। वह मुझे बताया करते थे कि लोगों द्वारा निर्वाचित सदस्य के नाते हमें मतदाता के प्रति अपने कर्त्तव्यों को पूरा करना है। वह आदर्शवादी व्यक्ति थे और अपने आदर्शों को पूरा करने के लिए बड़ी लगन से काम करते थे। उन्होंने जब कभी सदन में वक्तव्य दिया, वह बड़ी गंभीरता पूर्वक और प्रभावशाली ढंग से बोले। उनकी मृत्यु से देश को इस सदन को और उनके दल—कम्युनिस्ट दल (मार्क्सवादी) को बड़ी हानि हुई है।

मैं अपनी ओर से तथा डी. एम. के. की ओर से आपको निवेदन करता हू कि कृपया श्री मुकुन्द मंडल के शोक संतप्त परिवार को प्रेषित कीजिए और मैं सी० पी० एम के सदस्यों को अपनी संवेदना प्रकट करता हूं जिन्होंने अपना एक मूल्यवान सहयोगी खो दिया है।

श्री सुब्रह्मण्यम स्वामी (बम्बई उत्तर पूर्व) : महोदय, जनता पार्टी की ओर से मैं आपके द्वारा, संसदीय कार्य मन्त्री तथा मेरे सहयोगियों द्वारा प्रकट की गई संवेदना में सहभागी हूं।

श्री मंडल की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वह अपने उद्देश्य के प्रति पूरी निष्ठा से काम करते थे।। वह युवा थे, शिक्षित थे और एक कालेज में प्राध्यापक रहे। मुझे पूरा विश्वास है कि आज बंगाल के किसान, जिनके वह नेता थे और हर समय उनके हित में लगे रहते थे, बहुत शोकग्रस्त होंगे।

अपने दल की ओर से, मैं चाहता हूं कि उनकी मृत्यु पर उनके परिवार के सदस्य तथा उनके सभी समर्थक हमारी हार्दिक संवेदना स्वीकार करें।

श्री इन्द्रजीत गुप्त (बसीरहाट) : महोदय, एक दिन हम सबको जाना है। लेकिन जब

* तमिल में दिए गए मूल भाषण के अंग्रेजी अनुवाद का हिन्दी रूपान्तर

इतनी कम उम्र में मृत्यु अपने कठोर हाथों से किसी को छीन लेती है तो वह बहुत दुःखद होता है। अंतिम बार मैंने कामरेड मुकुन्द मंडल को उस दिन देखा जब उन्हें राष्ट्रपति चुनाव में मतदान के लिए व्हील चेयर पर यहाँ लाया गया। उस समय मेरे मित्रों ने मुझे बताया कि उनके स्वास्थ्य में सुधार हो रहा है और आशा है कि वह शीघ्र ही स्वस्थ हो जायेंगे। अतः हमें यह जानकर बहुत दुख हुआ कि उनका अकस्मात निधन हो गया है।

कामरेड मुकुन्द मंडल अनुसूचित जाति से सम्बन्धित थे और एक वह कालेज में प्राध्यापक थे। लेकिन वह अपनी जाति के प्रथम तथा अग्रवर्ती परिश्रमी कार्यकर्त्ता थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन अपने क्षेत्र के निर्धन खेतिहर मजदूरों और निर्धन किसानों के लिए समर्पित कर दिया। उन लोगों में उनके प्रसिद्ध होने का अन्दाज इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि उन लोगों ने उन्हें तीन बार, एक बार विधान सभा के लिए तथा दो बार लोक सभा के लिए निर्वाचित किया।

वह इस सदन के सक्रिय और कर्म० सदस्य थे लेकिन वह बहुत ही शांत और विनीत स्वभाव के थे। यही कारण है कि शायद बहुत से सदस्यों को, जब उन्होंने उनके निधन का समाचार सुना, एकदम उनका ध्यान नहीं आया। मैंने बहुत से सदस्यों को यह कहते सुना, "किस सदस्य की मृत्यु हुई है। उन्होंने स्वयं को कभी किसी पर नहीं लादा। वह बहुत सक्रिय और विनीत स्वभाव के थे। उनके निधन से हमें बहुत हानि हुई है।

श्री समर मुखर्जी द्वारा दिये गये वक्तव्य में और कुछ न जोड़कर मैं केवल अपनी तथा अपने दल की ओर से उनके परिवार तथा उनके दल को हार्दिक संवेदना प्रकट करना चाहता हूं। मुझे आशा है कि इस सदन के सभी सदस्य इस संवेदना में हमारे साथ शामिल होंगे।

श्री ए० नीलालोहिथादसन नाडार (त्रिवेन्द्रम) : अध्यक्ष महोदय; हमारे युवक साथी श्री मुकुन्द मंडल के आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट करते हुए और श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आपने और सदन के नेताओं ने जो विचार प्रकट किए हैं, उनसे मैं पूर्ण रूप से अपनी सहमति प्रकट करता हूं।

इतनी कम उम्र में श्री मुकुन्द मंडल का निधन बहुत दुःख की बात है। जैसा श्री समर मुखर्जी ने बताया चाहे सामाजिक क्षेत्र हो, राजनीतिक क्षेत्र हो या शिक्षा का क्षेत्र हो, उनकी देन सराहनीय है। उनसे और भी सेवाओं की प्रतीक्षा हम कर रहे थे और वे भी सेवा के लिए इच्छुक थे। ऐसी परिस्थितियों में जब कि देश की वामपंथी शक्तियों का एकीकरण भारत के भविष्य के निर्माण में महत्वपूर्ण बन गया है, ऐसी हालत में उनका निधन हमेशा के लिए कष्ट की बात है।

उनके निधन पर मैं अपनी और अपनी पार्टी की ओर से शोक प्रकट करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री राम विलास पासवान (हाजीपुर) : अध्यक्ष महोदय, मुकुन्द मंडल जी के साथ मुझे काफी समय रहने का मौका मिला। संयोग से 1977 से और उसके बाद दोबारा 1980 में हुए चुनाव

के बाद भी हम लोग खासकर एक ही कमेटी—शैडयूल्ड कास्टस और शैडयूल्ड ट्राइब्स—में हम लोग साथ ही रहे ओर प्रायः हम दोनों एक ही कमरे में रहा करते थे। देखने में भीतर से जहां वे उग्र लगते थे, अपने सिद्धांत और अपनी आइडियोलौजी के प्रति वे अटल थे, वही बहुत कम लोगों को मालूम है कि वे बहुत अच्छी कविता भी जानते थे। अच्छे लेखक थे। भले ही उनकी कविताएं थ्यौरी के आधार पर बंगला भाषा में होती थी, लेकिन यदि कोई भले ही उस भाषा को को न समझे, फिर भी उसके भाव को महसूस कर उद्वेलित हो जाता था। इसलिए जहां वे भीतर से अपने सिद्धांतों के प्रति काफी कमिटिड थे, वहां ऊपर से उतने ही शांत थे। जैसा यहां पर इन्द्रजीत बाबू ने कहा, बहुत कम लोगों को उनके सम्बन्ध में मालूम था और वे इतने सीधे थे, अध्यक्ष महोदय, कि मैं उनके विषय में आपको एक कहानी बताना चाहता हूं।

यहां पर नदी येल्लैया साहब बैठे हुए हैं। हम लोग एक बार नागालैंड गए थे। वहाँ पर एक दिन हमने उनसे पूछा कि मुकुन्द जी आप इनको पहचानते हैं। उन्होंने जवाब दिया कि नहीं तो हमने कहा कि ये यहां के गवर्नर हैं। बस, फिर वे उनके साथ आधे घण्टे तक उसी रूप में बात करते रहे, जैसे वे यहां के गवर्नर हों। जबकि वे हमारे अपने साथी ही थे। उनको अपने साथियों के बीच में इतना प्यार था कि वे हमेशा मौहब्बत के रिश्ते हर एक के साथ रखते थे। लेकिन विडम्बना देखिए कि कभी कभी हम लोग चाहे कुछ भी सोचते रहें, सारी चीजें हम लोग करते हैं, उसके बावजूद भी एक दिन एक दूसरे से जुदा होकर चले जाते हैं। राजनीति में रह कर आदमी में कुछ दूसरी प्रकार की भावना उत्पन्न होने लगती है। आज ऐसे साथी, हमारे बीच नहीं रहे और वे इससे इतना दूर चले गये हैं, सदा के लिए कि हम लाख प्रयास के बावजूद, लाख बुलाने के बावजूद उनसे नहीं मिल सकते। आज सिर्फ उनकी यादगार ही रह गई है। वे अब दोबारा हमारे बीच आ नहीं सकते हैं। ऐसी परिस्थिति में हमारे पास सिवाय दुख और संवेदना प्रकट करने के कोई दूसरी चीज नहीं रहती। मैं अपनी ओर से, अपनी पार्टी की ओर से, उनके परिवार उनके दल के सदस्यों के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं और सरकार से भी आग्रह करता हूं कि इतनी कम उम्र में हम लोगों से विदा हुए हैं, उनके परिवार के लिए, उनके बच्चे भी होंगे, उनके संबन्ध में कुछ कर सके, कुछ दे सके तो अच्छा होगा।

मैं इन्हीं शब्दों के साथ उनके प्रति श्रद्धांजलि प्रकट करता हूं

श्री राजेन्द्र प्रसाद यादव (मधेपुरा) : अध्यक्ष जी महोदय, मुकन्द मंडल जी आज हमारे बीच नहीं रहे इस खबर पर विश्वास नहीं होता। वे कितने सक्रिय राजनीति में रहे, हैं उसका सबूत है कि जैसा आप प्रायः देखेंगे उनके नाम कितने बिल्स और रिओनिसन्स हैं और वे इस सदन में बहुत अधिक एक्टिव रहे हैं। आज वे हमारे बीच नहीं हैं, यह सुनकर बड़ी तकलीफ होती है। मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से संवेदना प्रकट करता हूं और आपके द्वारा तथा सदन में विभिन्न दलों के नेताओं के द्वारा जो संवेदना प्रकट की गई है, उसमें अपने को शामिल करता हूं और चाहता हूं कि आप उनके शोक-संतप्त परिवार को यह संवेदना पहुचा दें।

श्री त्रिदिब चौधरी (बरहामपुर) : कामरेड मुकुंद मण्डल के निधन पर सभा में सभी पक्षों द्वारा व्यक्त भावनाओं से मैं अपने तथा अपने दल को सम्बद्ध करता हूँ। हममें से जो सदस्य

पश्चिम बंगाल से आये हैं और जो उन्हे अच्छी तरह जानते हैं, उन्हें आज सुबह उनके आकस्मिक निधन का समाचार सुनकर बहुत दु:ख हो रहा है, जबकि हम यह उम्मीद कर रहे थे। कि वह शीघ्र स्वस्थ होकर सदन में आएंगे। जो भी हो, ऐसा नही होना था। वह इस संसद के सबसे सक्रिय और युवा सदस्य थे, जिन्होंने अपने क्षेत्र में भी, विशेषकर वहां की पद दलित अनुसूचित जातियों के लिए कार्य किया।

मैं पुन: अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूँ।

श्री अमर राय प्रधान (कूच विहार)—श्री मुकुंद मण्डल अब हमारे बीच नहीं रहे। हमने एक कर्मठ और होनहार साथी खो दिया है।

मानव नश्वर है। हर व्यक्ति को आज या कल मरना ही है। हम उनके लिए शोक प्रकट करते हैं। लेकिन यह और भी दु:खद है कि हम बड़े लोग अपने से छोटे, 35 वर्ष के युवा के लिए शोक प्रकट कर रहे हैं।

अपने दल, फारवर्ड ब्लाक और अपनी ओर से मैं प्रो० मण्डल की याद में हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूँ।

श्री जी० एम० बनात वाला (पोनाली) : श्री मुकुंद मण्डल का दु:खद और असामयिक निधन चढ़ते हुए सूर्य के अस्त होने जैसा है। वह इस सदन के युवा और प्रतिभाशाली सदस्य थे। अपने दल मुस्लिम लीग की ओर से उनके दु:खद और आकस्मिक निधन पर व्यक्त की गई भावनाओं में मैं भी सहभागी हूँ।

हमारा आपसे निवेदन है कि आप शोकसन्तप्त परिवार को हमारी हार्दिक सम्वेदनाएं प्रेषित कर दें।

तत्पश्चात सदस्यगण कुछ क्षण मौन खड़े हुए।

अध्यक्ष महोदय : दिवंगत आत्मा के सम्मान में अब सभा कल ग्यारह बजे पुन: समवेत होने तक के लिए स्थगित होती है।

11-28

तत्पश्चात लोक सभा शुक्रवार, 22 अक्तूबर, 1982/30 आश्विन, 1904 (शक) के ग्यारह बजे तक के लिए स्थगित हुई।

———

प्रबन्धक—आर० आर० गुप्ता प्रेस, 472 पं० रामचन्द्र देहलवी मार्ग, दिल्ली-110009 द्वारा मुद्रित।